

S.No. 27

Vol. No 16 (2019) No 1
ISSN : 2393-9931

विश्लेषण

शोध-पत्रिका

कला, समाज-विज्ञान एवं विज्ञान

दीक्षान्त विशेषांक - मार्च 2019

**VISHLESHANA
RESEARCH JOURNAL**



PUBLICATION CELL

Rani Durgavati Vishwavidyalaya Jabalpur 482001 (M.P.) INDIA

Publisher :

Rani Durgavati Vishwavidyalaya
JABALPUR (M.P.)

Address :

Publication Cell

Department of Postgraduate Studies and Research in
Sanskrit, Pali and Prakrit
Rani Durgavati Vishwavidyalaya
JABALPUR (M.P.)

Vol. 16 No. 1, March 2019

(Arts, Social Science and Science) 2019

ISSN : 2393-9931

Lasertypeset & Printing by :

Standard Printing Press

Wright Town, Jabalpur

Phone : 9826307404, 8770081457

अनुक्रमणिका

क्र.	नाम	विषय	पृष्ठ
1.	प्रो (डॉ.) निर्मला एस मौर्य दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास	अनुवाद की सामयिकता 'कर लो दुनिया मुट्ठी में'	1-4
2.	डॉ. खेमसिंह डहेरिया इ.गॉ.रा.जन.वि.वि., अमरकंटक	आदिवासी लोकगीत एवं लोक संस्कृति	5-10
3.	प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	कृष्ण भक्ति काव्य और कला रूपों की लोकव्याप्ति	11-15
4.	डॉ. बीना बुदकी तालाब तिल्लो, जम्मू	लोक तत्त्व की विधा से सूफियाना संगीत	16-27
5.	प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर	पर्यावरण पोषक भारतीय संस्कृति	28-31
6.	प्रो. कमल नयन शुक्ल रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर	'रत्नेश : एक समीक्षा'	32-39
7.	डॉ. बिहारी लाल द्विवेदी मेकलसुता महाविद्यालय डिण्डौरी	आयुर्वेद का इतिहास एवं उपयोगिता	40-45
8.	डॉ. माधुरी पाण्डेय 'गर्ग' शा, तिलक पी.जी. कालेज, कटनी	दाम्पत्य जीवन के संबंधों का व्यापक विश्लेषण	46-51
9.	डॉ. सत्यप्रकाश त्रिपाठी बीएनकेबी पीजी कॉलेज, अकबरपुर	अवध की काव्य-परम्परा	52-60
10.	डॉ. आशा रानी रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर	संत साधना और प्रपत्तिवाद	61-64
11.	डॉ. काकानि श्रीकृष्ण आचार्य नागार्जुन विवि, आन्ध्रप्रदेश	चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना	65-67
12.	विनोद कुमार तनेजा निकट खालसा कॉलेज, अमृतसर	हिन्दी-जगत् में लोकप्रिय साहित्य की वापसी का दौर: इब्ने सफी बी.ए. की जासूसी दुनिया	68-69
13.	डॉ. विनय कुमार शुक्ल 'विद्रोही' जम्मू केन्द्रीय वि.वि., साम्बा	नागपुरी लोकसाहित्य में वर्णित वास्तु लोक कलाएं	70-72
14.	डॉ. रेखा रॉय अ.वि.वाजपेयी हिंदी वि.वि., भोपाल	समकालीन कहानी का रूप शिल्प	73-80
15.	डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय कुलपति निवास के पास, सागर	सजग और प्रखर समीक्षक : कृष्णदत्त पालीवाल	81-86
16.	डॉ. भगवत प्रसाद झारिया शा. स्नातक महाविद्यालय, शहपुरा	उच्च शिक्षा के अध्ययन-अध्यापन में सूचना और संचार तकनीकी की उपयोगिता	87-88
17.	डॉ. एस.आर.मेहरा शास.स्ना.महा. शहपुरा, डिण्डौरी	पर्यटन के क्षेत्र में राष्ट्रीय उद्यानों की भूमिका : म.प्र. के विशेष संदर्भ में	89-92

सजग और प्रखर समीक्षक : कृष्णदत्त पालीवाल

लक्ष्मी पाण्डेय

श्रीसूर्यम कुलपति निवास के पास
कोर्ट रोड 10, सिविल लाइन, सागर म.प्र.

मॉ. 9753207910, Email - shreesuryam@gmail.com

कृष्णदत्त पालीवाल तत्त्वान्वेषी आलोचक हैं। कम-से-कम छायावाद तथा दलित चिंतन संबंधी उनके ग्रंथ और टिप्पणियों पर यह विशेषण सटीक बैठता है। 1943 में जब उनका जन्म हुआ, प्रयोगवाद का आरंभ हो रहा था तथा 1970 में जब उनका प्रथम समीक्षात्मक ग्रंथ— 'पं. रामनरेश त्रिपाठी का काव्य' प्रकाशित हुआ तब 'नई कविता' स्थापित हो चुकी थी। 1970 से 'घर वापसी' अर्थात् परमात्मा की शरण में जाने की तिथि फरवरी 2015 तक कृष्णदत्त पालीवाल की रचनात्मकता निरंतर बनी रही। उन्होंने 47 ग्रंथों का प्रणयन तथा 32 ग्रंथों का संपादन किया। इस शोधालेख के लिए मैंने उनके छह ग्रंथों को आधार बनाया— 'भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार', 'मैथिलीशरण गुप्त : प्रासंगिकता के अंतः सूत्र', 'हिन्दी आलोचना का सैद्धान्तिक आधार', 'अज्ञेय होने का अर्थ', 'दलित साहित्य के बुनियादी सरोकार', तथा 'सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का रचना कर्म'...। और यह कह सकती हूँ कि कृष्णदत्त पालीवाल बहुपठ, बहुज्ञ, साहित्य मनीषी हैं उनका चिन्तन पुष्ट एवं सुविचारित है।

अपने आत्मकथ्य में कृष्णदत्त जी लिखते हैं — "मैं उत्तर आधुनिक समय में सर्जनशीलता का आस्वादक, आशंसक हूँ।" चूंकि मुझे इस — 'उत्तर आधुनिक' पद पर आपत्ति है, मैं आधुनिकता के साथ उत्तर, पूर्व जोड़ना अनुचित मानती हूँ। मुझे लगता है यह सदैव वर्तमान सम्यता, संस्कृति, विचारधारा की संगति को दर्शाने वाला शब्द है। इसलिए कृष्णदत्त पालीवाल जी को मैं प्रयोगवादी काल से नई कविता, अकविता आदि कालों के साथ निरंतर रचनाशील रहे समीक्षक के रूप में देखती हूँ। वे आधुनिक काल के प्रखर समीक्षक तथा गंभीर अध्येता हैं किन्तु जब भारतीय काव्यशास्त्र के रस-सिद्धांत के अनुसार 'काव्यात्मा रसः' के पक्ष में खड़े होकर 'रस ही काव्य का प्राण तत्व है' कहते हैं तथा यह टिप्पणी भी करते हैं कि — "भारतीयता का अर्थ है— लोकमंगल के लिए जीना।" — "हिन्दी की आधुनिक सैद्धान्तिक समीक्षा का मूलधार संस्कृत साहित्यशास्त्र ही रहा है।... भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा इतनी व्यापक, विस्तृत एवं समृद्ध है कि अपनी इस अत्यधिक मूल्यवान रत्न-राशि पर हमें आज भी गर्व होता है।" तब वे शास्त्रीयता के निकट और समन्वयवादी समीक्षक प्रतीत होते हैं। भारतीयता, लोकमंगल, विज्ञान की लोकमंगलकारी भूमिका आदि शब्दों, पदों का उल्लेख करते हुए कृष्णदत्त जी हजारी प्रसाद द्विवेदी के उस कथन का स्मरण कराते हैं जिसके भाव हैं — "हर पुराना त्याज्य नहीं होता तथा हर नयी वस्तु, विचार ग्रहणीय नहीं होते ...। यह हमारे विवेक पर निर्भर है कि हम दोनों में से उन तत्त्वों, विचारों का चयन करें जो मानवता के हित में हों, कल्याणकारी हों।"

भारतीय संस्कृति तथा मंगलकारी परम्पराओं के गर्व और गरिमा के धारक, प्रबुद्ध समीक्षक कृष्णदत्त जी मूल्यों की चिन्ता करते हैं। वे 'आत्मकथा' में लिखते हैं — "मूल्यों का प्रश्न साहित्य के प्रत्येक अध्येता के लिए गुरुतर प्रश्न है।" मूल्यों की रक्षा तथा उनकी महत्ता और प्रासंगिकता को बनाए रखने में वैज्ञानिक दृष्टि तथा छायावाद की महती भूमिका को रेखांकित करती उनकी दो टिप्पणियाँ दृष्टव्य हैं— "समग्रतः छायावाद हमारे सामाजिक सांस्कृतिक-साहित्यिक मूल्यों की सर्वाधिक मूल्यवान धरोहर है, वह हमारी परंपरा से विकसित सच्ची आधुनिकता है। गहरे अर्थ में वह हमारे सांस्कृतिक नवजागरण का जीवंत काव्य है। उसे पश्चिम का अनुकरण मानना मिथ्या है और अपनी सांस्कृतिक धरोहर को न पहचानने वाली दृष्टि की अज्ञानता और कृतघ्नता।" दूसरी टिप्पणी कुछ इस तरह है— "विज्ञान दृष्टि का ही नतीजा है कि छायावाद, भाग्यवाद तथा मायावाद के खण्डन में प्रवृत्त होकर भोगवाद को ठुकराता है। उसे काम्य है—भोगमय कर्म—सौंदर्य की उपासना। उसे काम्य है— नर-नारी की सम्मिलित शक्ति से उत्पन्न आनन्दवाद। उसे काम्य है—नारी बलिदान से उत्पन्न प्रेरणा शक्ति। उसे काम्य है— शोषणकारी शक्तियों से पूर्ण मुक्ति। इस दृष्टि से छायावाद अखण्ड विश्व-दृष्टि का आत्म-दर्शन है।" बेशक 'विज्ञान' ने 'दर्शन' की तरह ही विचार-क्रांति उत्पन्न कर आधुनिक विश्व की तर्क शक्ति को इतना और इस तरह परिष्कृत कर प्रखर बनाया है कि अब मनुष्य भावावेश में विवेकांध होकर निर्णय नहीं लेता बल्कि विवेक और हृदय के समन्वय से ही निर्णय के पथ